International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—3

शोध पत्र- विधि

Dec.-09—Jan.-2010

मानव सेवा के परिप्रेक्ष्य में रेडक्रॉस की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन

* मुकेश कुमार मालवीय

*अतिथि विद्वान विधि, शास. नवीन विधि महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

यूं तो विश्व में अनेक संस्थाएँ कार्यरत हैं, लेकिन पीड़ित मानवता की सेवा में जो नाम रेडक्रास ने कमाया है, उसकी बात ही अलग है। मानव सेवा के प्रति समर्पित इस संस्था के बारे में आप कितना जानते हैं? आइए, देखते हैं इसे करीब से। दुनिया भर में मानवता की सेवा में लगी रेडक्रास संस्था के जन्म की कहानी सन् 1859 से शुरू होती है। स्विट्जरलैंड के व्यवसायी **हैनरी ड्यूनाट** व्यापारिक, कामकाज के सिलसिले में 24 जून, 1859 को उत्तरी इटली गए थे। उन दिनों वहाँ आस्ट्रिया और फ्रांस की सेना में भीषण युद्ध छिड़ा हुआ था। संयोगवष, हैनरी, 'सोलेफेरिनो' में एक दिन की भीषण लड़ाई के साक्षी बने। उन्होने युद्ध में करीब 40 हजार सैनिकों को हताहत तथा हजारों सैनिकों को इलाज के अभाव में तड़पते व खून से लथपथ देखा। इस दर्दनाक नजारे ने हैनरी के दिल को अंदर तक हिला दिया। युद्ध ने उनके मन में मानव सेवा व करूणा का ऐसा बीज बोया, जो आज पूरी दुनिया में 'रेडक्रास' के वटवृक्ष के रूप में दिखाई देता है।

उन घायलों की बुरी हालत से दुःखी होकर हैनरी ड्यूनाट ने उन्हें सहायता पहुँचाने की कोषिष की और स्थानीय जनता से सहायता का आग्रह किया। उन्होंने एक प्रेरक पुस्तक ''ए मेमोरी ऑफ सोलेफेरिनो'' (सोलेफेरिनो की स्मृति) लिखी, जो शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गई। इस पुस्तक में उन्होंने सहायता समितियॉं गठित कर स्वयंसेवी सहायता का विकास करने का सुझाव दिया और कहा कि भविष्य की राष्ट्रीय रेडक्रास समितियॉं सैन्य चिकित्सा सेना की सहायता के लिए होंगी। ड्यूनाट ने यह सुझाव भी दिया कि इन समितियों का कार्य एक अन्तर्राष्ट्रीय कन्वेंषन पर आधारित होना चाहिए। यह एक ऐसा विचार था, जिसके माध्यम से घायलों की देखभाल करने वालों और अस्पतालों के निर्माण एवं संरक्षण की व्यवस्था हो सकी। सन् 1863 में जेनेवा के 4 नागरिकों ने ड्यूनाट के विचारों से सहमत होकर उनके साथ काम करने के लिए एक समिति बनाई। यही समिति बाद में 'रेडक्रास की अन्तर्राष्ट्रीय समिति' बनी, जिसने जेनेवा में एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन में 16 देषों के विशेषज्ञों ने हिस्सा लिया। इसी सम्मेलन ने रेडक्रास की आधारषिला रखी। सन् 1863 में हैनरी समेत जेनेवा वासियों ने रेडक्रास की नींव रखी थी। उस समय इसका नाम 'इंटरनेशनल कमेटी फार रिलीफ टू दी वुंडेड' था। सन् 1863 में पहली बार बेल्जियम, रूस, डेनमार्क, फ्रांस, इटली, स्पेन और कुछ यूरोपीय देशों में रेडक्रास समितियॉं गठित की गई।

सन् 1864 में 12 देशों की सरकारों ने रेडक्रास के सिद्धांतों को अपनाया। ''जेनेवा संधि'' नामक ये 10 सिद्धांत मानव सेवा के इतिहास में मील का पत्थर बन गए। रेडक्रास दो प्रकार की संस्थाओं के रूप में काम करता है। एक जेनेवा स्थित अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास समिति (आईसीआरसी) तथा दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास समिति फेडरेशन। वर्तमान में 178 से अधिक देशों में रेडक्रास समिति कार्यरत है। दुनिया भर में करोड़ों रेडक्रास कार्यकर्ता मानवता की सेवा में जुटे हुए है। रेडक्रास के **पहले अध्यक्ष हैनरी इनी** थे। संस्था का प्रमुख पारम्परिक रूप से स्विस नागरिक ही बनता है। रेडक्रास व रेडिक्रिसेंट फैडरेषन के प्रमुख स्पेन के 'जुआन मेनुअल सारेज डेल रिवेरी' है। रेडक्रास का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीयता, जातीयता, नस्ल, समाज या राजनीतिक भेदभाव के बिना, पीड़ित मानव की सेवा करना है साथ ही रेडक्रास एक ऐसा राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय माध्यम है जिसका मूलभूत उद्देश्य युद्ध के समय बीमार, घायल तथा बंदियों की देखभाल करना है साथ ही रेडक्रास युद्ध की विभीषिका झेल चुके लोगों के लिये एवं प्राकृतिक आपदाओं के शिकार लोगों के पुनर्वास, स्वास्थ्य एवं पोषण की व्यवस्था भी करता है। थोड़े ही समय बाद 'प्रथम

राष्ट्रीय सहायता समितियॉं गठित की गई। जेनेवा समिति की पहल पर अगले वर्ष 12 राष्ट्रों के पूर्णाधिकार प्राप्त दूतों ने युद्ध क्षेत्र में घायल सैनिकों की हालत सुधारने के लिए 22 अगस्त, 1864 के जेनेवा कन्वेंशन पर हस्ताक्षर किए और फिर संरक्षण प्रतीक सफेद पृष्ठभूमि पर रेडक्रास, जो स्विट्जरलैंड के झंडे का उलटा है, प्रयोग में आने लगा। इस तरह रेडक्रास के विश्वव्यापी आन्दोलन का जन्म हुआ।

सन् 1977 में अतिरिक्त प्रोटोकाल 8 जून को स्वीकार किया गया, वहीं प्रथम प्रोटोकाल अंतर्राष्ट्रीय सशस्त्र संघर्ष के शिकार हुए लोगों के संरक्षण के लिए था। वहीं द्वितीय प्रोटोकाल संविदाकारी राज्यों के मध्य सशस्त्र संघर्ष को उपचार देने से संबंधित था। विष्व भर में रेडक्रास आन्दोलन के मार्गदर्शन के लिए रेडक्रास ने अपने 20वें सम्मेलन में निम्नलिखित 7 सिद्धांत अपनाएँ:

1. **मानवता**— लड़ाई के मैदान में घायल हुए लोगों को बिना भेदभाव सहायता पहुंचाने की इच्छा से जन्मा रेडक्रास अपनी अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय क्षमता के अन्तर्गत हर स्थिति में मानवीय पीड़ा को दूर करने और कम करने की कोशिष करता है।

2. **निष्पक्षता**— यह संगठन नागरिकता, जाति, धार्मिक विश्वासों, वर्ग तथा राजनैतिक मतों के आधार पर भेद नहीं करता। यह तो पीड़ा से मुक्ति दिलाने की कोशिश करता है। संकट के समय तत्काल महत्व के मामलों को सर्वाधिक प्राथमिकता देता है।

3. **तटस्थता**— सभी पक्षों के विश्वास को बनाए रखने के लिए रेडक्रास राजनीतिक, जातीय, धार्मिक अथवा वैचारिक किस्म के विवादों में हिस्सा नहीं लेता और न युद्धरत पक्षों में से किसी का साथ देता है।

4. **स्वतंत्रता**— रेडक्रास स्वतंत्र है। अपनी सरकारों की मानवीय सेवाओं में सहायक होते हुए और अपने—अपने देशों के कानूनों के अंतर्गत कार्य करते हुए भी राष्ट्र समितियों के लिए अपनी स्वायत्तता सदैव बनाएँ रखना अनिवार्य है, जिससे कि वे हर समय रेडक्रास के सिद्धांतों के अनुरूप कार्य कर सके।

5. **स्वयंसेवी सेवा**— रेडक्रास एक स्वयंसेवी सहायता संगठन है, जो किसी भी तरह से लाभ की इच्छा से प्रेरित नहीं है।

6. **एकता**— किसी एक देष में केवल एक ही रेडक्रास समिति हो सकती है। यह सभी के लिए अनिवार्यतः खुली रहे और यह अपनी सीमा के भीतर सर्वत्र अपना मानवतावादी कार्य संचालित करती रहे, यह आवश्यक है।

7. **विश्वव्यापी संस्था**— यह एक विश्वव्यापी संस्था है, जिसमें सभी समितियों के एक समान अधिकार है और एक—दूसरे की मद्द करना जिनका कर्तव्य है।

विभिन्न देशों में रेडक्रास की स्थितिः—

1. **अमेरिका**— क्लारा वाटसन नामक एक महिला ने सन् 1881 में अमेरिकी रेडक्रास संगठन की स्थापना की। यह नागरिक और प्रतिरक्षा संगठन को सहयोग देता आया है। यह बीमार, घायल व्यक्तियों की घरेलू देखभाल करता है एवं संकट के समय सामूहिक भोजन की व्यवस्था भी करता है।

2. **ब्रिटेन**— ब्रिटेन में रेडक्रास नागरिक प्रतिरक्षा में तथा औद्योगिक प्रतिष्ठानों तथा हवाई हमलों से सावधानी के संबंध में सहयोग के लिए बनाया गया था, सन् 1939 में यहां रेडक्रास ने मानव सेवा के लिए विषेष कार्य किये।

3. **भारत**— 'भारतीय रेडक्रास सोसायटी' की स्थापना सन् 1920 में संसद के 15वें अधिनियम के तहत हुई। इसमें सन् 1992 में संशोधन किया गया और सन् 1994 से यह लागू हुआ। भारत में रेडक्रास के संस्थापक उस समय के वर्तमान राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी थे। भारत में रेडक्रास ने औपचारिक रूप से कामकाज सन् 1934 में, बिहार में आए विनाशकारी भूकम्प के साथ शुरू किया। उसके बाद सन् 1965 एवं 1971 के भारत—पाक युद्ध में भी रेडक्रास ने युद्धबंदियों की सहायता की। वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर पर भारत की राष्ट्रपति इस समिति की अध्यक्षा हैं।

सभी राज्यों और संघीय क्षेत्रों में राज्यपाल इसके अध्यक्ष होते है। राज्यपाल एक सभापति नामांकित करते है और गठित प्रबंध समिति द्वारा संविधान के अनुरूप गतिविधियां और कार्यक्रम संचालित किए जाते है। इस प्रबंध समिति के पदेन सदस्य के रूप में शासकीय विभागों के प्रतिनिधि, कुछ प्रमुख समाजसेवी और जिला शाखाओं के प्रतिनिधि होते है। जिला स्तर पर समिति का प्रमुख जिले का कलेक्टर होता है। मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुरूप एक प्रबंध समिति होती है। यह मार्गदर्शक सिद्धांत जिला शाखाओं के लिए तैयार आदर्श नियमों में दिये गये है। जिले की यह समिति, जिले में समिति के विकास के लिए कार्य करती है और उसके कार्यक्रमों को संचालित करती है। जिला रेडक्रास समिति की तहसील व विकास खण्ड पर उपषाखाएं भी हो सकती है। ऐसे अनेक उदाहरण है जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास के इन 3 अंगों के साथ विषाल पैमाने पर सहायता कार्य आयोजित किये गये है।

सन् 1920 में अस्तित्व में आने के बाद से ही भारतीय रेडक्रास समिति ने न सिर्फ युद्ध ही वरन् शान्ति के समय की सामान्य परिस्थितियों में भी बहुमूल्य सेवा की है। भारत जैसे

विषाल और अविकसित देष में बाढ़, चक्रवात, सूखा, अग्निकाण्ड, साम्प्रदायिक झगड़ों जैसी विपत्तियॉ और संकट पैदा होते ही रहते है, जो नागरिकों के लिए ढेर सारी विपदाएँ पैदा कर देते है। ऐसी सारी परिस्थितियों में यह समिति दुःखी और जरूरतमंद लोगों को सहायता पहुॅचाने में अग्रणी रहती है। इसके साथ ही समिति ने अपनी गतिविधियों को बहुमुखी बना लिया है और यह पीड़ित जनता की स्थिति सुधारने के लिए मानवीय प्रकृति के कार्यक्रमों को नियमित रूप से किसी भेदभाव के आयोजन कर रही है। दुनिया भर में प्रसिद्ध रेडक्रास अपने प्रतीक चिन्ह बदलने जा रहा है। रेडक्रास और इसकी इस्लामिक सहायता संस्था रेडक्रिसेंट ने अब धार्मिक रूप से विवादास्पद क्षेत्रों में एक ही निषान को अपनाने का फैसला किया है। यह नया प्रतीक चिन्ह 'रेड क्रिस्टल' होगा। लाल रंग का यह निषान एक तिरछे वर्ग के आकार की रचना है, जिसका बैकग्राउन्ड सफेद रंग का होगा।

उल्लेखनीय है कि हाल के वर्षों में रेडक्रास चिन्ह को ईसाइयों का प्रतीक चिन्ह मानकर अनेक देषों में खासतौर पर इस्लामिक देषों में रेडक्रास पर कई हमले हुए है। पिछले वर्षो में इराक में विद्रोहियों ने बगदाद में रेडक्रास के मुख्यालय पर हमला कर उसे खासा नुकसान पहुॅचाया था। इसी प्रकार के अनेक हमले इजराइल और अन्य देषों में भी हुए हैं रेडक्रास की अन्तर्राष्ट्रीय समिति के अनुसार रेडक्रास चिन्ह की जगह अब रेडक्रिसेंट के प्रतीक चिन्ह का इस्तेमाल किया जायेगा। वैसे कई बार रेडक्रास और इसकी सहायक संस्थाओं में प्रतीक चिन्ह को लेकर विवाद हो चुका है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की इस संस्था के लिए अधिकतर देष एक ही प्रतीक चिन्ह के पक्षधर रहे है। वहीं बदलने से मेडिकल कार्यकताओं को जान का खतरा और बढ़ जाने की आषंका है। युद्ध के दौरान असमंजस की स्थिति में निर्दोश सेवकों की जान भी जा सकती है।

सहायता के कार्यों में अग्रणी रहने वाला रेडक्रास इस समय अभूतपूर्व आर्थिक संकट के दौर से गुजर रहा है। संगठन ने समुद्री तूफानों के राहत कार्य के बाद 2.3 बिलियन डालर की राशि एकत्र करने का लक्ष्य रखा है। यह राषि 11/9/2001 को अमेरिका पर हुए आतंकी हमले के दौरान एकत्रित की गई राशि से दोगुनी है। लेकिन अब तक का कलेक्षन उत्साहवर्धक नहीं है।

संगठन की प्रवक्ता कैरी मार्टिन के अनुसार अब तक हम 1.3 बिलियन डालर ही एकत्र कर पाए है। अमेरिका के प्रमुख समाचार पत्र 'वाषिंगटन पोस्ट' के अनुसार रेडक्रास और देष पर आई अब तक की सबसे बड़ी आपदा है। मार्टिन ने बताया कि संगठन अब तक 340 मिलियन डालर की राषि अपने कार्यक्रम चलाने के लिए उधार ले चुका है। इसके बावजूद हम अभी भी 400 मिलियन डालर की राषि एकत्र करने को लेकर आषावान है। इससे हमें अपने ऋणों को वापस करने और कार्यक्रमों को चलाते रहने में मदद मिलेगी। हम अपने दानदाताओं के पास फिर जाकर उन्हें और आर्थिक सहयोग देने का आग्रह करेंगे। इसके अलावा हम नए दादाताओं की भी तलाष कर रहे हैं। रेडक्रास के अनुसार वह अब तक की सबसे बड़ी मदद देष में आए समुद्री तूफान कैटरीना और रीटा के कहर के प्रभावितों को आर्थिक रूप से दे रहा है। यह मदद अब तक लगभग 10 लाख लोगों को दी जा चुकी है। यह सहायता राषि प्रति परिवार 1 हजार से 1,200 डालर तक है और इससे संगठन पर लगभग 1.5 मिलयन डालर (15 लाख डालर) का भार पड़ा है। इसके अलावा रेडक्रास ने समुद्री तूफान के कारण विस्थापित परिवारों के लिए आपात् राहत षिविर भी खोले थे। इनमें से 6 सप्ताह तक 27 राज्यों के लगभग 2 करोड़ लोगों को भोजन सामग्री वितरित की गई।

मध्यप्रदेष राज्य के बारे में कहें तो यहाँ शासन के उच्च शिक्षा विभाग ने भी प्रत्येक महाविद्यालय में रेडक्रास सोसायटी के गठन और उसमें छात्रों की भागीदारी पर जोर दिया है।

वास्तव में रेडक्रास का मूल्यांकन करें तो इसने इसकी स्थापना के बाद से आज तक बखूबी मानवीय कार्य किये हैं। चाहे अमेरिका की पर्ल हाबर की घटना हो या जापान के हिरोषिमा या नागासाकी में सहायता या सन् 1918 का टायफस रोग साथ ही चीन एवं भारत युद्ध में युद्धबंदी सहायता, ईराक युद्ध, अफगानिस्तान में कार्य, विश्व के शरणार्थियों की सहयता एवं भारत के बाढ़, चक्रवात, सूखा, अग्निकांड, साम्प्रदायिक दंगे आदि में इसनें जरूरत मंदों, असहायों, तड़पते, बिलखते एवं भूखे–नंगों की सहायता की। आज विश्व के (सन् 2005 तक 192 देष) सभी देशों में इसके कार्यालय है। रेडक्रास को भारत सरकार ने गांधी–शान्ती पुरस्कार दिया है। साथ ही रेड्क्रास ही वह पहली संस्था है जिनसे मानव सेवा एवं शांति के लिए प्रथम नोबेल पुरूस्कार प्राप्त किया। इसका विस्तार ही मानव सेवा एवं इसके कर्तव्य निष्ठा का प्रतीक चिन्ह है। अतः यह कहना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि रेडक्रास–मानव सेवा का पर्याय है।